दीपावली : पंचपर्व का उल्लास, आराधना का वैभव और प्रकाश का संदेश



भारत पर्वों और त्योहारों की सांस्कृतिक विरासत से समृद्ध देश है। यहाँ प्रत्येक पर्व के पीछे कोई न कोई धार्मिक आस्था, पौराणिक आख्यान, ऐतिहासिक प्रसंग अथवा सामाजिक संदेश निहित है। इन्हीं पर्वों में दीपावली भारतीय संस्कृति का एक ऐसा महापर्व है, जो अंधकार पर प्रकाश, असत्य पर सत्य और अधर्म पर धर्म की विजय का संदेश देता है। यह केवल दीप जलाने और उत्सव मनाने का अवसर नहीं, बल्कि हमारी धार्मिक आस्था, पारिवारिक परंपराओं, सामाजिक सद्भाव और सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक है।

दीपावली मनाने की सर्वाधिक प्रचलित मान्यता भगवान श्रीराम के चौदह वर्ष के वनवास की अवधि पूर्ण करने तथा रावण पर विजय प्राप्त करने के पश्चात माता सीता और अनुज लक्ष्मण के साथ अयोध्या लौटने की खुशी से जुड़ी है। शास्त्रों के अनुसार, भगवान श्रीराम के आगमन पर अयोध्या वासियों ने नगर को दीपों से सजाकर उनका स्वागत किया था। कार्तिक अमावस्या की अंधेरी रात में अयोध्या नगरी असंख्य दीपों के प्रकाश से जगमगा उठी थी। इसी परंपरा को दीपोत्सव के रूप में मनाए जाने की परम्परा प्रचलित है। यद्यपि दीपोत्सव की परंपराओं के अन्य प्राचीन धार्मिक और ऐतिहासिक संदर्भ भी मिलते हैं।

दीपावली का उत्सव सामान्यतः पाँच दिनों तक चलता है। इसकी शुरुआत धनतेरस से होती है, जिसमें भगवान धन्वंतरि के प्राकट्य की स्मृति के साथ आरोग्य और समृद्धि की कामना की जाती है। इसके बाद नरक चतुर्दशी अथवा रूप चौदस आती है, जो भगवान श्रीकृष्ण द्वारा नरकासुर के वध की पौराणिक कथा से जुड़ी है। तीसरे दिन कार्तिक अमावस्या को दीपावली का मुख्य पर्व मनाया जाता है। चौथे दिन गोवर्धन पूजा एवं अन्नकूट का आयोजन होता है, जो भगवान श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत धारण करने की कथा और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का प्रतीक है। पाँचवें दिन भाई दूज का पर्व भाई-बहन के स्नेह और पारिवारिक संबंधों की मधुरता को अभिव्यक्त करता है।

दीपावली का मुख्य आकर्षण - लक्ष्मी-गणेश पूजन

पंचदिवसीय उत्सव का सबसे प्रमुख आकर्षण कार्तिक अमावस्या की संध्या को होने वाला लक्ष्मी-गणेश पूजन है। माँ लक्ष्मी को धन, वैभव, ऐश्वर्य और समृद्धि की अधिष्ठात्री देवी माना जाता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार समुद्र मंथन से माँ लक्ष्मी का प्राकट्य हुआ था। दीपावली पर उनके पूजन का भाव घर-परिवार और व्यवसाय में सुख, शांति, समृद्धि एवं मंगल की कामना करना है।

माँ लक्ष्मी के साथ भगवान गणेश की पूजा भी विशेष महत्त्व रखती है। गणेश जी बुद्धि, विवेक, शुभारंभ और विघ्न विनाश के प्रतीक हैं। यह परंपरा हमें संदेश देती है कि धन-संपत्ति के साथ सद्बुद्धि और विवेक का होना भी आवश्यक है। विवेकहीन समृद्धि मनुष्य के लिए कल्याणकारी नहीं हो सकती।

कुछ परंपराओं में माँ लक्ष्मी और गणेश के साथ माँ सरस्वती का पूजन एवं स्मरण भी किया जाता है। माँ सरस्वती ज्ञान, विद्या, संगीत, कला और साहित्य की अधिष्ठात्री देवी हैं। भारतीय संस्कृति में धन के साथ ज्ञान और विवेक के समन्वय को जीवन की सार्थकता का आधार माना गया है। इस प्रकार लक्ष्मी, सरस्वती और गणेश की आराधना समृद्धि, ज्ञान और सद्बुद्धि के संतुलित जीवन का संदेश देती है।



बंगाल में माँ काली की आराधना दीपावली की धार्मिक विविधता का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष बंगाल की काली पूजा है। पश्चिम बंगाल, असम और पूर्वी भारत के कुछ अन्य क्षेत्रों में कार्तिक अमावस्या की रात्रि को माँ काली की विशेष आराधना की जाती है। माँ काली शक्ति, साहस, निर्भयता और दुष्ट शक्तियों के विनाश की प्रतीक हैं। इस अवसर पर भव्य पंडाल सजाए जाते हैं, माँ की प्रतिमाओं की स्थापना होती है तथा विशेष पूजा-अर्चना और आरती आयोजित की जाती है। कोलकाता के कालीघाट और दक्षिणेश्वर काली मंदिर सहित अनेक शक्तिपीठों में विशेष आयोजन होते हैं।

इससे स्पष्ट होता है कि भारत के विभिन्न क्षेत्रों में दीपावली की पूजा-पद्धति और धार्मिक अभिव्यक्ति भिन्न हो सकती है, किंतु श्रद्धा और मंगलकामना का भाव समान है।

व्यापारिक एवं सामाजिक परंपराएँ

दीपावली पर घरों के साथ-साथ व्यापारिक प्रतिष्ठानों की भी विशेष सजावट की जाती है। व्यापारी वर्ग अपने बही-खातों और लेखा पुस्तकों का पूजन करता है। गुजरात में इसे चोपड़ा पूजन कहा जाता है। नए बही-खाते आरंभ करने, व्यापार में उन्नति और आर्थिक समृद्धि की कामना की जाती है।

घरों के मुख्य द्वार पर रंगोली बनाई जाती है, वंदनवार लगाए जाते हैं तथा मिट्टी के दीपक प्रज्वलित किए जाते हैं। दीप जलाने की यह परंपरा केवल सजावट नहीं, बल्कि अज्ञान और निराशा को दूर कर ज्ञान, आशा और सकारात्मकता का प्रकाश फैलाने का प्रतीक है।

विभिन्न धर्मों में दीपावली का महत्त्व

दीपावली भारतीय धार्मिक एवं सांस्कृतिक समन्वय का भी परिचायक है। जैन धर्म में कार्तिक अमावस्या को भगवान महावीर के निर्वाण दिवस के रूप में मनाया जाता है। उनकी निर्वाण प्राप्ति की स्मृति में दीप प्रज्वलित किए जाते हैं।

सिख धर्म में इसी समय बंदी छोड़ दिवस मनाया जाता है। यह दिवस छठे सिख गुरु श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी की ग्वालियर किले से 52 राजाओं सहित मुक्ति और अमृतसर आगमन की स्मृति से जुड़ा है। इस अवसर पर गुरुद्वारों में विशेष सजावट और दीप प्रज्वलन होता है। अमृतसर का श्री हरिमंदिर साहिब इस अवसर पर विशेष रूप से आलोकित होता है।

इस प्रकार दीपावली विभिन्न धार्मिक परंपराओं को जोड़ने वाला एक व्यापक सांस्कृतिक उत्सव भी है।

दीपावली और हमारा सामाजिक दायित्व

वर्तमान समय में दीपावली के उत्सव को पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ना भी आवश्यक है। मिट्टी के दीपकों का प्रयोग, स्थानीय कारीगरों और छोटे व्यापारियों से खरीदारी, स्वच्छता का ध्यान तथा ध्वनि और वायु प्रदूषण से बचाव हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। उत्सव की प्रसन्नता ऐसी हो, जिससे किसी अन्य व्यक्ति, जीव-जंतु अथवा प्रकृति को कष्ट न पहुँचे।

दीपावली का वास्तविक सौंदर्य केवल घरों को प्रकाशित करने में नहीं, बल्कि समाज में प्रेम, सहयोग, करुणा और सद्भाव का प्रकाश फैलाने में है। हमें अपने भीतर के अज्ञान, अहंकार, ईर्ष्या और द्वेष के अंधकार को मिटाकर ज्ञान, विनम्रता और सद्भाव के दीप प्रज्वलित करने चाहिए।

उपनिषदों का यह अमर संदेश दीपावली की मूल भावना को अत्यंत सुंदर ढंग से अभिव्यक्त करता है–

असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय॥

अर्थात् हमें असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो।

निस्संदेह, दीपावली केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन का प्रकाशमान पर्व है। यह हमें स्मरण कराती है कि जीवन में धन के साथ ज्ञान, शक्ति के साथ सदाचार और व्यक्तिगत समृद्धि के साथ सामाजिक कल्याण भी आवश्यक है। आइए, इस दीपावली पर हम केवल अपने घरों में ही नहीं, बल्कि अपने हृदय और समाज में भी सद्भाव, विश्वास, प्रेम और मानवता के दीप प्रज्वलित करें।

कुँ. प्रवल प्रताप सिंह राणा
प्रवल , नोएडा ,
8584026210

महावीर स्वामी के निर्वाण कल्याणक पर 72 छठ-बेले की तपस्या कर नगर में रचा स्वर्णिम इतिहास कांठेड़ परिवार के नन्हे बच्चों ने लिया पारणे का लाभ





महिदपुर रोड में साध्वी डॉ.अमृतरसा श्रीजी महाराज साहब की पावन निश्रा में 72 समाजजनों ने की कठिन तपस्या, नन्हे बाल तपस्वियों ने भी बढ़ाया गौरव महिदपुर रोड में भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण कल्याणक एवं गौतम स्वामी के केवलज्ञान प्राप्ति के पावन एवं मंगलकारी अवसर पर राजेंद्र सूरी ज्ञान मंदिर में चातुर्मास हेतु विराजित परम पूज्य साध्वी डॉ.अमृतरसा श्रीजी महाराज साहब आदि ठाणा की पावन निश्रा में नगर में धर्म एवं तपस्या की अनुपम मिसाल देखने को मिली।

इस पावन अवसर पर नगर के लगभग 72 समाजजनों ने छठ-बेले अर्थात लगातार 2 उपवास की कठिन तपस्या कर धर्म आराधना की।विशेष बात यह रही कि छोटे से नगर महिदपुर रोड में लगभग 190 जैन समाजजनों की संख्या होने के बावजूद 72 लोगों द्वारा तपस्या करना अपने आप में एक ऐतिहासिक उपलब्धि है।इस तप आराधना के माध्यम से समाजजनों ने नगर में तपस्या का नया कीर्तिमान स्थापित कर स्वर्णिम इतिहास रचा।

धर्मसभा में पूज्य साध्वी डॉ.अमृतरसा श्रीजी महाराज साहब ने भगवान महावीर स्वामी एवं गौतम स्वामी के जीवन चरित्र,उनके त्याग,तप,संयम एवं धर्म संदेशों की विस्तारपूर्वक विवेचना करते हुए उपस्थित समाजजनों को जिनवाणी का रसपान कराया।उन्होंने धर्म आराधना एवं तपस्या के महत्व को समझाते हुए जीवन में संयम और आत्मकल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। इस तप आराधना की विशेष उपलब्धि यह रही कि नन्हे-नन्हे बाल तपस्वियों ने भी बेले की कठिन तपस्या कर नगर एवं समाज को गौरवान्वित किया।बच्चों से लेकर बड़ों तक में धर्म के प्रति उत्साह,श्रद्धा एवं समर्पण का अद्भुत वातावरण देखने को मिला।जैन समाज मीडिया प्रभारी सचिन भंडारी ने बताया कि समस्त तपस्वियों के पारणा कराने का मंगलकारी लाभ कांठेड़ परिवार को प्राप्त हुआ।परिवार के संस्कारी बच्चों हृदय एवं श्रेयस ने अपनी गुल्लक में संचित की गई राशि से अपनी परदादी श्रीमती लीलाबाई,दादाजी दिनेशकुमार एवं पिता राहुलकुमार कांठेड़ की आज्ञा एवं प्रेरणा से इस पुनीत एवं मंगलकारी लाभ को लिया। बच्चों द्वारा अपनी गुल्लक के पैसों को धर्मकार्य में समर्पित करना परिवार के उच्च संस्कारों एवं धार्मिक भावना का प्रेरणादायी उदाहरण बना।

सकल जैन श्रीसंघ महिदपुर रोड द्वारा लाभार्थी कांठेड़ परिवार की खुब-खुब बारंबार अनुमोदना की गई तथा बच्चों की इस सुंदर धर्मभावना एवं संस्कारों की मुक्तकंठ से सराहना की गई। इस प्रकार भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण कल्याणक पर 72 समाज जनों द्वारा छठ-बेले की तपस्या और नन्हे बालकों की धर्म के प्रति समर्पण भावना ने महिदपुर रोड नगर को धर्म आराधना के क्षेत्र में एक नई पहचान प्रदान की तथा समाज में तप,त्याग, संयम और संस्कारों का अनुपम संदेश दिया।



दिपावली की महालक्ष्मी ने भारत पर बरसाया कुबेर का खजाना!

डॉलर पस्त रुपये की ऐतिहासिक छलांग, सात महीने के शिखर पर! शेयर बाजार में 35 साल का महा-रिकॉर्ड! निवेशकों की दौलत में ?29.57 लाख करोड़ का महा-इजाफा! भारत की दीपावली इस वर्ष केवल दीपों, आतिश बाजी, खुशियों और मां लक्ष्मी की आराधना तक सीमित नहीं रही,बल्कि देश की अर्थव्यवस्था के लिए भी एक बेहद शुभ आर्थिक संदेश लेकर आई है।दीपावली के आसपास भारतीय शेयर बाजार में आई ऐतिहासिक तेजी विदेशी निवेशकों की जबरदस्त वापसी,कच्चे तेल की कीमतों में भारीगिरावट और अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपये की मजबूत वापसी ने अंतरराष्ट्रीय आर्थिक जगत का ध्यान भारत की ओर आकर्षित किया है।

एक ओर एशिया के प्रमुख प्रौद्योगिकी बाजारों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़ी कंपनियोंके शेयरों में भारी बिकवाली ने निवेशकों की चिंता बढ़ाई,वहीं दूसरी ओर भारतीय बाजार ने इस वैश्विक उथल-पुथल के बीच अपनी अलग पहचान बनाई। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह बताना चाहूंगा कि विदेशी पूंजी का भारत की ओर रुख करना इस बात का संकेत है कि वैश्विक निवेशक अब भारत की विकास संभावनाओं, कंपनियों की कमाई और बाजार के मूल्यांकन को नए दृष्टिकोण से देख रहे हैं।ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो दीपावली की शुभ रात्रि में मां महालक्ष्मी की कृपा ने भारतीय अर्थव्यवस्था को एक नई ऊर्जा प्रदान की हो। हालांकि,इस तेजी को स्थायी आर्थिक विजय मानने के बजाय इसके पीछे काम कर रहे वास्तविक आर्थिक कारकों को समझना भी उतना ही आवश्यक है।यह लेख निवेश सलाह नहीं, बल्कि आर्थिक घटनाक्रम का सटीकता से विश्लेषण है।

साथियों बात अगर हम डॉलर की अकड़ कमजोर, भारतीय रुपये ने लगाई सात महीने की छलांग! को समझने की करें तो दीपावली के बाद 9 नवंबर 2026 को भारतीय मुद्रा बाजार से भी उत्साहजनक खबर सामने आई। अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपये ने शुरुआती कारोबार में 24 पैसे की मजबूती हासिल करते हुए 93.74 रुपये प्रति डॉलर का स्तर छू लिया। यह लगभग सात महीने का उच्चतम स्तर बताया गया। इससे पहले शुक्रवार को रुपया 93.98 रुपये प्रति डॉलर पर बंद हुआ था। रुपये की इस मजबूती के पीछे केवल डॉलर की कमजोरी नहीं, बल्कि कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट, विदेशी निवेशकों की वापसी और पश्चिम एशिया में तनाव कम होने की उम्मीदों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत जैसे देश के लिए रुपये की मजबूती का विशेष महत्व है, क्योंकि भारत अपनी जरूरत का लगभग 90 प्रतिशत कच्चा तेल आयात करताहै।जब अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल महंगा होता है, तब भारत को आयात के लिए अधिक डॉलर खर्च करने पड़ते हैं।इससे विदेशी मुद्रा भंडार, चालू खाते के घाटे और रुपये पर दबाव बढ़ सकता है।इसके विपरीत कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट से भारत का आयात बिल कम करने में सहायता मिलती है।इसलिए रुपये की मौजूदा मजबूती को भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए सकारात्मक संकेत के रूप में देखा जा सकता है। फिर भी यह समझना आवश्यक है कि 93.74 का स्तर पिछलेमहीनों की तुलना में सुधार है, रुपये की ऐतिहासिक रूप से मजबूत स्थिति नहीं। असली चुनौती इस सुधार को लंबे समय तक बनाए रखने की होगी।

साथियों बात अगर हम ड्रैगनके पड़ोसियों में बेचैनी, भारत के बाजार में विदेशी पूंजी की बरसात! को समझने की करें तो इस आर्थिक घटनाक्रम का सबसे महत्वपूर्ण पहलू विदेशी निवेशकों की बदली हुई रणनीति है। पिछले कुछ समय से विदेशी निवेशकों की पूंजी का बड़ा हिस्सा अमेरिका तथा एशिया के प्रौद्योगिकी आधारित बाजारों की ओर जा रहा था। दक्षिण कोरिया और ताइवान जैसे देशों के शेयर बाजार कृत्रिम बुद्धिमत्ता, चिप निर्माण और तकनीकी कंपनियों से जुड़े निवेश के प्रमुख केंद्र बने हुए थे। लेकिन जब निवेशकों के मन में यह सवाल उठने लगा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में कंपनियां जितना विशाल निवेश कर रही हैं, उसके अनुपात में भविष्य में कमाई कितनी होगी, तब वैश्विक बाजारों में मुनाफावसूली और बिकवाली का दबाव बढ़ गया।इसका असर दक्षिण कोरिया ताइवान और जापान के बाजारों पर भी दिखाई दिया।इसी बदले हुए वातावरण में भारत विदेशी निवेशकों के लिए एक आकर्षक विकल्प बनकर उभरा। बिजनेस स्टैंडर्ड की 6 नवंबर की रिपोर्ट के अनुसार, विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने पांच कारोबारी दिनों में भारतीय शेयरों में लगभग 45,960 करोड़ रुपये की शुद्ध खरीदारी की। यह आंकड़ा अक्टूबर में विदेशी निवेशकों की लगभग 45,162 करोड़ रुपये की शुद्ध बिकवाली से भी अधिक महत्वपूर्ण वापसी को दर्शाता है।इस घटनाक्रम का व्यापक संदेश यह है कि अंतरराष्ट्रीय पूंजी किसी एक देश की स्थायी संपत्ति नहीं होती, बल्कि वह बेहतर अवसर, संभावित लाभ और जोखिम के संतुलन की तलाश में लगातार अपना ठिकाना बदलती रहती है। भारत को इस बदलाव का लाभ मिलता दिखाई दे रहा है।

साथियों बात अगर हम संवत 2083 का आर्थिकआगाज दलाल स्ट्रीट पर 35 वर्षों का ऐतिहासिक धमाका! को समझने की करें तो,भारतीय शेयर बाजार की दीपावली से पहले की तेजी ने इस बार इतिहास के पन्नों में अपना नाम दर्ज कराया है।सेंसेक्स और निफ्टी लगातार सात कारोबारी सत्रों तक बढ़त के साथ बंद हुए। इस सात दिवसीय तेजी में सेंसेक्स लगभग 10.6 प्रतिशत यानी 7,782 अंक चढ़ा,जबकि निफ्टी में लगभग 10.27 प्रतिशत की बढ़त दर्ज की गई।पिछले 35 वर्षों में दीपावली से पहले इतनी बड़ी सात सत्रों की तेजी देखने को नहीं मिली थी। 6 नवंबर को सेंसेक्स 81,028.02 और निफ्टी 25,030.35 पर बंद हुआ। दोनों प्रमुख सूचकांकों ने 80,000 और 25,000 के महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक स्तरों को पार किया। इस तेजी के दौरान बीएसई में सूचीबद्ध कंपनियों का कुल बाजार पूंजीकरण लगभग 29.57 लाख करोड़ रुपये बढ़कर 503.11 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया। इसका अर्थ है कि निवेशकों की संपत्ति में एक सप्ताह के भीतर भारी वृद्धि हुई। वहीं 9 नवंबर को कारोबार समाप्त होने पर रॉयटर्स के अनुसार निफ्टी 50 लगभग 25,044.65 और सेंसेक्स 81,106.65 पर बंद हुआ। दोनों सूचकांक 27 फरवरी के बाद अपने सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंचे। इस प्रकार दीपावली के आसपास भारतीय बाजारों में उत्साह का सटीकता से वातावरण बना रहा।



साथियों बात अगर हमभारत के पक्ष में काम कर रहे हैं तीन बड़े आर्थिक महाफैक्टर !को समझने की करें तो भारत की इस आर्थिक चमक के पीछे तीन प्रमुख कारक दिखाई दे रहे हैं।पहला और सबसे महत्वपूर्ण कारक कच्चे तेल की कीमतों में भारी गिरावट है। पश्चिम एशिया में तनाव कम होने और अमेरिका-ईरान के बीच संभावित कूटनीतिक समाधान की उम्मीदों ने अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा बाजार में राहत पैदा की है। ब्रेंट क्रूड की कीमत अक्टूबर के अंत में लगभग 118 डॉलर प्रति बैरल के आसपास पहुंचने के बाद गिरकर 100 डॉलर से नीचे आ गई और 9 नवंबर को लगभग 97-98 डॉलर के स्तर पर कारोबार करती दिखाई दी। यह भारत के लिए बड़ी राहत है, क्योंकि तेल की कीमतों में कमी से आयात बिल, महंगाई और विदेशी मुद्रा की मांग पर दबाव कम हो सकता है।दूसरा महा फैक्टर विदेशी निवेशकों की वापसी है। विदेशी संस्थागत निवेशकों ने 6 नवंबर को ही भारतीय शेयर बाजार में लगभग 13,749.82 करोड़ रुपये की शुद्ध खरीदारी की। पूरे सप्ताह में विदेशी पूंजी का प्रवाह और भी अधिक रहा। तीसरा महाफैक्टर भारतीय कंपनियों के वित्तीय प्रदर्शन और बाजार में उपलब्ध निवेश अवसर हैं। बैंकिंग, वित्तीय सेवाओं और कई अन्य क्षेत्रों में शेयरों की तेजी ने बाजार को मजबूती प्रदान की। निवेशकों को उम्मीद है कि यदि कंपनियों की कमाई में सुधार जारी रहता है और शेयरों का मूल्यांकन आकर्षक बना रहता है, तो भारतीय बाजार में विदेशी पूंजी का प्रवाह आगे भी सटीकता से जारी रह सकता है।

साथियों बात अगर हम अमेरिका के मध्यावधि चुनाव और कृत्रिम बुद्धिमत्ता की चिंता ने बदला निवेश का वैश्विक गणित! को समझने की करें तो, इस पूरी कहानी का एक महत्वपूर्णअंतरराष्ट्रीय पहलू अमेरिका के मध्यावधि चुनावों और कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़ी कंपनियों में आई बिकवाली से भी जुड़ा है। अमेरिका में राजनीतिक समीकरणों में बदलाव तथा राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की नीतियों को लेकर निवेशकों की नई अपेक्षाओं ने वैश्विक बाजारों में अनिश्चितता बढ़ाई है।दूसरी ओर कृत्रिमबुद्धिमत्ता के क्षेत्र में अत्यधिक पूंजी निवेश, महंगे डेटा केंद्रों और भविष्य में संभावित कमाई को लेकर उठे सवालों ने तकनीकी कंपनियों के शेयरों पर दबाव बनाया। दक्षिण कोरिया और ताइवान जैसे देशों के बाजार इस घटनाक्रम से प्रभावित हुए। भारत को इस स्थिति में तुलनात्मक लाभ इसलिए मिला क्योंकि भारतीय शेयर बाजार का स्वरूप कंवल तकनीकी कंपनियों पर निर्भर नहीं है। यहां बैंकिंग, वित्तीय सेवाओं, दूरसंचार, वाहन, दवा, उपभोक्ता वस्तुओं और औद्योगिक कंपनियों की भी महत्वपूर्ण हिस्सेदारी है। इस विविधताने वैश्विक प्रौद्योगिकी क्षेत्र की बिकवाली के बीच भारतीय बाजार कोअपेक्षाकृत बेहतर अवसर प्रदान किया। हालांकि, इसका अर्थ यह नहीं है कि भारत वैश्विक आर्थिक संकट से पूरी तरह सुरक्षित है। अंतरराष्ट्रीय निवेश का वातावरण बदलने पर भारतीय बाजार भी प्रभावित हो सकता है।

साथियों बात अगर हम क्या भारतीय अर्थव्यवस्था बनने जा रही है वैश्विक निवेशकों की पहली पसंद? को समझने की करें तो,आज अंतरराष्ट्रीय निवेशकों के सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि आने वाले वर्षों में आर्थिक विकास, उपभोक्ता मांग, कंपनियों की कमाई और राजनीतिक स्थिरता के लिहाज से कौन- सा देश बेहतर अवसर प्रदान करेगा। भारत के पक्ष में सबसे बड़ी ताकत उसका विशाल घरेलू बाजार, युवा आबादी, बढ़ता मध्यम वर्ग, डिजिटल भुगतान व्यवस्था, बुनियादी ढांचे में निवेश और सेवा क्षेत्र की मजबूती है।भारतीय अर्थव्यवस्था में उपभोग की व्यापक संभावनाएं हैं और देश की विकास यात्रा को केवल विदेशी मांग पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। यही कारण है कि वैश्विक अनिश्चितता के बीच भी भारत निवेशकों की निगाहों में महत्वपूर्ण बना हुआ है।हालांकि,आर्थिक महाशक्ति बनने के लिए केवल शेयर बाजार का चढ़ना या विदेशी निवेशकों का पैसा आना पर्याप्त नहीं है। रोजगार सृजन, औद्योगिक उत्पादन, निर्यात में वृद्धि, किसानों की आय, महंगाई पर नियंत्रण और आम नागरिकों की क्रयशक्ति में सुधार भी उतने ही आवश्यक हैं। भारत को अपनी आर्थिक मजबूती का लाभ समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाना होगा।

साथियों बात कर हम आगे भी जारी रहेगी लक्ष्मी की कृपा या बाजार में आएगा मुनाफा वसूली का तूफान? को समझने की करें तो,अब सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या संवत 2083 में भारतीय शेयर बाजार की यह तेजी लगातार जारी रहेगी? बाजार विशेषज्ञों के सामने आने वाले दिनों में कई महत्वपूर्ण चुनौतियां भी हैं। विदेशी निवेशकों की खरीदारी में निरंतरता, कच्चे तेल की कीमतों का स्तर, अमेरिकी डॉलर की चाल, अमेरिकी फेडरल रिजर्व की ब्याज दर संबंधी नीतियां, पश्चिम एशिया की परिस्थितियां और भारतीय कंपनियों के तिमाही नतीजे बाजार की दिशा तय करेंगे।सातकारोबारी सत्रों की जबरदस्त तेजी के बाद कुछ निवेशक मुनाफा वसूली कर सकते हैं, जिससे बाजार में उतार-चढ़ाव आनास्वाभाविक है। इसके अतिरिक्त यदि कच्चे तेल की कीमतें फिर बढ़ती हैं अथवा विदेशी निवेशक दोबारा भारतीय बाजार से पूंजी निकालने लगते हैं, तो रुपये और शेयर बाजार दोनों पर दबाव भी अधिक बढ़ सकता है। इसलिए निवेशकों को केवल तेजी देखकर उत्साहित होने के बजाय आर्थिक बुनियाद, कंपनियों के वास्तविक प्रदर्शन और जोखिम का आकलन करना चाहिए।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि दीपावली 2026 के आसपास भारतीय अर्थव्यवस्था को अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों से एकमहत्वपूर्ण सकारात्मक अवसर मिला है। दक्षिण कोरिया और ताइवान के बाजारों में तकनीकी शेयरों की बिकवाली,विदेशी निवेशकों का भारतीय बाजार की ओर लौटना, कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट, रुपये की सात महीने की ऊंचाई और सेंसेक्स-निफ्टी की 35 वर्षों की रिकॉर्ड प्री-दिवाली तेजी ने भारत की आर्थिक संभावनाओं को वैश्विक चर्चा के केंद्र में ला दिया है। यह निश्चित रूप से भारत के लिए उत्साहजनक समय है। मां लक्ष्मी की आराधना के पर्व पर भारतीय अर्थव्यवस्था को मिले इन सकारात्मक संकेतों को आर्थिक समृद्धि की शुभ शुरुआत के रूप में देखा जा सकता है।लेकिन वास्तविक आर्थिक लक्ष्मी तभी मानी जाएगी, जब शेयर बाजार की बढ़ती संपत्ति के साथ आम आदमी की आय बढ़े, रोजगार के अवसर पैदा हों, महंगाई नियंत्रित रहे और देश का उत्पादन तथा निर्यात मजबूत हो। भारत के पास वैश्विक आर्थिक नेतृत्व की दिशा में आगे बढ़ने का अवसर अवश्य है। अब चुनौती इस अवसर को स्थायी आर्थिक शक्ति में बदलने की है। दिवाली के दीपों से जगमगाते भारत के लिए संवत 2083 आर्थिक आत्मविश्वास, निवेश और समृद्धि का नया अध्याय लिख सकता है।

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया
महाराष्ट्र 9226229318